ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 108-112**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड-19(वैश्विक महामारी) के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के प्रति शैक्षणिक वातावरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन

1. डॉ0 विजय पाराशर
2. श्रीमती तेजुबार शेख

1. एसोसिएट प्रोफेसर, 2. शोध अध्येती– बी.सी.जी. शिक्षा महाविद्यालय, देवास (म0प्र0) भारत

Received-29.07.2022, Revised-05.08.2022, Accepted-10.08.2022 **E-mail: bed.vijay1982@gmail.com**

सारांश:– *शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के सामंजस्य पूर्ण स्वाभाविक विकास मे सहयोग देकर उसका सर्वांगीण विकास करती है, उन्हें अपने वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करती हैं। सक्रिय रहकर सीखने की विधि में शिक्षक व विद्यार्थी दोनों कक्षा शिक्षण में सक्रिय रह रहे हैं। सक्रिय रहने से बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि बढ़ती है, बच्चे खुश नजर आ रहे हैं उनमें सिखने के प्रति अधिक जिज्ञासा उत्पन्न हो रही हैं। बच्चे बिना झिझक के शिक्षकों से अपनी समस्याओं का समाधान पूछ रहे हैं। सक्रिय रहकर सीखने के माध्यम से बच्चों में कल्पनाशीलता और सृजनशीलता बढ़ रही हैं। बच्चों में आपस में मिलजुल कर सीखने की आदत पड़ती है, इसलिए यह आवश्यक है कि सक्रिय रहकर सीखने की विधि की प्रभावशीलता का आकलन किया जा रहा हैं। कोरोना वायरस का प्रभाव आज समूचे विष्व पर पड़ रहा है। दुनिया के लगभग सभी देश इससे प्रभावित हो रहे हैं। इस वायरस के कारण कई देश आर्थिक तंगी से गुजर रहे हैं। और हम धीरे–धीरे वैश्विक मंदी की तरफ बढ़ रहे हैं। कोरोना वायरस की वजह से कई कठिनाईयों आई। कई देशो में लॉकडाउन और कर्फ्यू की स्थिति रही। जिसके कारण कई क्षेत्र प्रभावित हुए जैसे उद्योग जगत, सामाजिक क्षेत्र आर्थिक क्षेत्र एवं इसके साथ–साथ एक अत्यंत ही महत्तवपूर्ण क्षेत्र है। शिक्षण का क्षेत्र कोरोना महामारी से अत्यंत ही प्रभावित हो रहा है। जिसके कारण आज तक स्थिति सामान्य नही हुई हैं। प्राथमिक हो, माध्यमिक हो या उच्च शिक्षा छात्रों का पठन–पाठन बुरी तरह से प्रभावित हो रहा है, कुछ संस्थानों ने ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली का इस्तेमाल कर अपने छात्रो को सहयोग करने की पूरी कोशिश की हैं।*

कुंजीभूत शब्द– जन्मजात, सामंजस्य, स्वाभाविक विकास, सर्वांगीण विकास, वातावरण, सक्रिय, प्रति रुचि, प्रणाली,कर्फ्यू।

भारत सरकार एवं सभी राज्यों की सरकारों ने भी इस दिशा में कई कदम उठा रही है। छात्रों को विभिन्न ऑनलाइन माध्यमों से ''इ'' कटेंट उपलब्ध कराया जा रहा है, परन्तु यह कक्षा–कक्ष शिक्षा प्रणाली की तरह प्रभावी नहीं हैं। ऐसे छात्र जो उच्च शिक्षा के लिए नए कोंस में प्रवेश चाहते है, जब तक उनका पुराना परिणाम घोषित नही हुआ एवं लॉकडाउन समाप्त नही हुआ उनकी प्रवेश परिक्षाएँ एवं नामांकन वर्तमान प्रणाली में संभव नहीं है और इस वजह से प्रवेशार्थी एवं उनके परिवार जन मानसिक तनाव की स्थिति से गुजर रहे है। हालाकि यू.जी.सी. ए.आई.सी.टी.ई., सी.बी.एस.ई. इत्यादि सरकारी एजेंसीया इस विषय को लेकर चिंतीत है और जरुरी दिशा–निर्देश दिए जा रहे है। जो छात्र अभी उच्च शिक्षा के विशेषकर तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के अंतिम वर्ष में है, जिनका स्तर अभी नीचा दिखाई दे रहा है, क्योंकी लॉकडाउन की वजह से संस्थान एवं कम्पनी दोनो ही बंद है। यही स्थिती इंटर्नशिप प्रोग्राम को लेकर भी है। हालांकी कुछ आई.आई.टी. आई.आई.एम. एंव एमिटी जैसे बड़े संस्थानों ने अपने छात्रों के लिए खूद ही इंटर्नशिप की व्यवस्था की है अपितू बड़ी संख्या में छात्र इस स्थिति से परेशान हैं। छात्रों की इंटर्नशीप के लिए भी कई कंपनिया आगे आ रही है फिर भी जरुरत है बड़े पैमाने पर संस्थाओं को आगे आने की जिससे छात्र एक तो अपना कोर्स पूरा करेगें साथ ही साथ आत्मविश्वास के साथ शैक्षणिक गतिविधियों में खुद व्यस्त रहेंगे, एक और महत्तवपूर्ण विषय है कि जो छात्र पहलें खुल कर रहते थे, विभिन्न गतिविधियों जैसे खेल, मनोरंजन आदि में अपने सहपाठियों के साथ खुलकर भाग लेते थे, आज वो छात्र अपने घरो में कैद है, सामाजिक दूरी बना रहे है। ऐसे में अगर यह स्थिति आगे भी बनी रही तो यह छात्र मानसिक तनाव में आ सकते है। वहीं टी.वी., लेपटॉप, मोबाईल, का अधीक उपयोग भी उनकी मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव डाल रहा है। मानसिक अवसाद की ऐसी अवस्था से छात्रों को बचाने के लिए मनोवैज्ञानिकों को आगे आना चाहिए एवं उनका मार्गदर्शन करना चाहिए।

कोविड–19 (कोरोना महामारी) का दौर बितने के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र मे उभरने वाले आयामो पर किए गए एक अध्ययन मे कहा गया है कि कोविड–19 महामारी के कारण डिजीटल माध्यम से अधिक मात्रा में लोग पढ़ाई कर रहे है और कम समय–सीमा वाले पाठ्यक्रम भी लोकप्रिय हो रहे है। इन बदलावों से कठिनाईयॉ तो हो रही है लेकिन इनमें शिक्षा के क्षेत्र में नए विचारो के उदाहरण भी सामने आ रहे है। इससे यह साफ है कि शैक्षणिक जगत में डिजीटल माध्यम का प्रभाव लंबे समय तक रहने वाला है। कोरोना महामारी के दबाव के कारण स्कूल और कॉलेजो में पढ़ाई करने के लिए डिजीटल माध्यम का प्रयोग और अधिक किया गया है। जिसके कारण शैक्षणिक लक्ष्यों को जैसे एप और ई–मेल का प्रयोग बढ़ गया है। शैक्षणिक संस्थान ऐसी सरंचना का विकास कर रहे है, जिससे अध्यापक और छात्र शैक्षणिक संस्थानों से बाहर रहते हुए भी पठन–पाठन

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

संभव हो रहे है एवं गुणवत्तापूर्ण ऑनलाइन शिक्षा दी जा रही है।

कोविड–19 के नाम से पुकारे जाने वाले इस वायरस का पूरा नाम कोरोना–वायरस है। यह वायरस आज संपूर्ण विष्व में ज्वालामुखी की भांति फैलता जा रहा है। चीन से शुरु होने वाला यह वायरस भारत समेत अनेक देशो के करोड़ो निवासियों की जान ले चुका है। अभी भी यह पुरी तरह से खत्म नहीं हुआ है, इसका खतरा प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर मंडरा रहा है। कोविड–19 एक भयंकर संक्रमण है, जो कि एक दूसरे के संपर्क में आने वाले से फैलता है। यह वायरस साल 2019 में चीन देश से शुरु हुआ था। चीन में इस संक्रमण से संक्रमीत पहला केस 8 नवंबर को सामने आया पूरे विश्व को अपने चपेट में ले लिया है। कोरोना वायरस (कोविड–19) से संबंधीत कई प्रकार के वायरसो में से एक है। कोविड–19 के कारण तथा वर्ष 2019 में इसकी उत्पत्ती होने के कारण इस वायरस का संक्षिप्त नाम कोविड–19 रखा है। पहले इसे चिनी वायरस का नाम भी दिया गया परन्तू WHO के अनुसार इसका नाम कोविड–19 रखा गया। विश्व संगठन के अनुसार वायरस का नाम किसी भी देश के नाम से या अनुचित रुप से प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। खासना, छींकना, तेज बूखार आना तथा गंध व स्वाद का आभास न होना कोरोना वायरस के लक्षण है। इन लक्षणों के अतिरिक्त व्यक्ति को सांस लेने में भी कठीनाई का सामना करना पड़ता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरल सुगम एवं बोधगम्य बनाने के लिए शिक्षक हर संभव प्रयास करते हैं। और प्रत्येक समय यहि सोचते रहते हैं कि कैसे या फिर किन साधनो के माध्यम से शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जाए और अपनी बात आसानी से विद्यार्थियों तक कैसे पहुचाई जाए ताकी उनको समयानुकूल नवीन एवं स्थाई ज्ञान प्रदान किया जा सकें। इसमें जरा भी संदेह नहीं कि ऑनलाईन प्लेटफॉर्मस शिक्षण अधिगम को प्रभावशाली बनाकर उसके प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमीका निभा रहे है। ऑनलाइन माध्यम से विद्यार्थी इंटरनेट एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे टी.वी., कम्प्युटर, टेबलेट, लेपटॉप, रेडियो, स्मार्ट फोन आदि के द्वारा घर बैठे ही शिक्षा प्राप्त कर सकते है। इनके माध्यम से डीप लर्निंग, आर्टिफिश्यिल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, मशीन टू मशीन संचार, तथा ई–शिक्षा आदि को बढ़ावा मिल रहा है।

अध्ययन का ओचित्य – कोरोना के दौरान जो अभिभावक ऑनलाइन शिक्षा संबंधी उपकरण, डेटा प्लान आदि की व्यवस्था जुटा पाए तो भी सिर्फ एक–दो बच्चों तक ही सीमित रही। ऐसे परिवार जहॉ इससे ज्यादा बच्चे थे वहॉ बालिकॉए इन सुविधाओं से वंचित रह गई। संयुक्त राष्ट्र संघ महासचिव ने भी कहा था कि कोविड–19 महामारी शिक्षा की अब तक की सबसे बड़ी बाधा है। इससे सबसे अधिक लड़किया तथा महिलॉए प्रभावित होगी। एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट (ASAR-2021) भी बताती है कि उत्तर प्रदेश, बिहार तथा पश्चिमी बंगाल जैसे सर्वाधिक जनसंख्या वाले राज्यों में भी बच्चों के पास स्मार्ट फोन सबसे कम थे, उनके पास मूलभूत संसाधन नही थे। जब कि इनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत सुदृढ़ होती है। तो गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन करने वाले, सरकारी, बेसिक शिक्षा, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षण संस्थाओं के छात्र एवं अभिभावकों की असहाय एवं दयनीय स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। जहॉ केवल 24: घरों घरो में ही इंटरनेट की सुविधा हो, केवल 11: घरों में कम्प्युटर की सुविधा देखी गयी, 30: लोगों के पास ही स्मार्ट फोन पाये गये। कोरोना के समय खाने के लिए हाड़–तोड़ मेहनत करने के बावजूद भी रोज मजदूरी नही मिल पाती हो तो बच्चों को विद्यालय जाने से पहले एवं बाद में भी अभिभावको का हाथ बॅटाना पड़े, मजदूरी करने वहॉ ऑनलाइन षिक्षा की बात करना एक तरह से बेईमानी ही होगी कोविड काल में जहॉ कि इस प्रकार की शिक्षा का प्रयोग सर्वाधिक किया गया था, उसमें सरकारी, बेसिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी तो लगभग कक्षा से बाहर ही हो गये थे। अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन के अलावा कोरोना वायरस ने जिस चीज को सर्वाधिक प्रभावित किया है, वह है शिक्षा व्यवस्था इसका प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में उच्च शिक्षा से लेकर स्कूली शिक्षा पर प्रभाव पड़ रहा है। जिसके कारण सभी स्तर के विद्यार्थियों से लेकर उच्च स्तरीय सभी विद्यालयों में जूम, गूगल क्लास रुम, माइक्रोसॉफ्ट टीम, व्हाट्सअप, आदि के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षण का विकल्प अपनाया है। जो इस संकट के समय एकमात्र सहारा हैं। लेकिन इस ऑनलाइन शिक्षा का कही न कही हमारी शिक्षा व्यवस्था पर असर दिखाई दे रहा है। क्या सच में ऑनलाइन शिक्षा देश की सारी शैक्षिक जरुरतों का हल हैं। क्या ऑनलाइन शिक्षा कक्षीय शिक्षा का समुचीत विकल्प है और क्या यह भारतीय परिवेश के अनुकूल है। क्या नियमित कक्षा में किया गया शिक्षण कार्य उचित है। अतः इस बात की जिज्ञासा महसूस की गई की क्या कोविड महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा सभी विद्यार्थियों का समावेश कर पाने में कारगार रही? क्या कोविड–19 महामारी के दौरान यह शिक्षा वैकल्पिक शिक्षा के तौर पर कामयाब रही? क्या यह शिक्षा विद्यार्थियों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही हैं? अतः इन प्रश्नों के उत्तर जानने हेतू शोधार्थी ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड–19 के दौरान शैक्षणिक वातावरण का अध्ययन का चयन किया गया।

अध्ययन के उद्धेश्य –

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की भूमिका

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

का अध्ययन करना।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के प्रति शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना –

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की भूमिका का अध्ययन करने में सार्थक अंतर पाया जाता है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के प्रति शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन करने में साथर्क अंतर पाया जाता है।

सीमांकन – प्रस्तुत शोध कार्य हेतु देवास जिले के सरकारी व निजी विद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड–१९ महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की भूमिका –

(तालिका – 01)

ऑनलाइन शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों का दृष्टिकोण

क्रमांक	प्रश्न	सहमत%
1	ऑनलाईन शिक्षा से आपको सिखने के अवसर प्राप्त हो रहे हैं।	88%
2	कोविड–19 की स्थिति सामान्य होने तक क्या ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं।	86%
3	ऑनलाईन शिक्षण के समय आपको ऑडियों विडियों एवं पाठ्य सामग्री स्पष्ट नहीं हो पाती हैं।	77%
4	आपके जिन साथियों को ऑनलाइन षिक्षा नहीं मिल पा रही है। क्या उनका उपलब्धि स्तर प्रभावित होगा।	74%
5	ऑनलाईन शिक्षा के कारण आपको प्रयोगात्मक एवं कौशल आधारित ज्ञान पूर्णतया प्राप्त नहीं हो पाता है।	64%
6	ऑनलाईन शिक्षा की वजह से आपका ध्यान अवधि। फैलाव प्रभावित हो रहा है।	57%
7	ऑनलाइन शिक्षण में व्यस्त होने पर आपको शंका समाधान के पर्याप्त अवसर मिलते हैं।	56%
8	शिक्षक सीधे अंतःक्रिया (Interaction) न होने के कारण आप ई–कंटेंट को अपेक्षाकृत गंभीरता से नहीं लेते हैं।	52%
9	ऑनलाइन शिक्षा के कारण आप ऑख दर्द, पेट दर्द, सिर दर्द एवं तनाव आदि महसूस कर रहे हैं।	50%
10	क्या ऑनलाईन शिक्षा में आपकी रुची धीरे–धीरे कम हो रही है।	42%

तलिका–1 के अवलोकन से स्पष्ट होता हैं कि सर्वाधिक 88% विद्यार्थियों ने स्वीकार किया है कि ऑनलाइन शिक्षा से उन्हें सीखने के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो रहे है। 86% विद्यार्थियों ने कोविड–19 से स्थिति सामान्य होने तक ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने इच्छा व्यक्त की हैं। 77% विद्यार्थियों ने यह स्वीकार किया है कि ऑनलाइन शिक्षण के समय उन्हें ऑडियों, विडियों एवं पाठ्यसामग्री स्पष्ट नही हो पा रही है।

ऑनलाइन शिक्षा से वंचित साथियों की उपलब्धि स्तर में कमी को 74% विद्यार्थियों ने माना है। 64% विद्यार्थियों ने माना कि इस शिक्षा के कारण वह प्रयोगात्मक तथा कौशल आधारित ज्ञान को पूर्णतया प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। 57% विद्यार्थियों ने स्वीकार किया है कि इस शिक्षा से उनका फैलाव प्रभावित हो रहा हैं। 56% विद्यार्थियों ने माना कि इस शिक्षा में उन्हें शंका समाधान के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो रहे है।

जबकि 52% विद्यार्थियों का मानना है कि ऑनलाइन शिक्षक से सीधे अन्तःक्रिया न होने के कारण वह ई–कंटेंट को गम्भीरता से नहीं ले पाते है। 50% विद्यार्थियों ने ऑनलाइन शिक्षा के कारण सिर दर्द, पेट दर्द, ऑख दर्द, आदि प्रकार की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बताई हैं। साथ ही 42% विद्यार्थियों ने माना कि इस शिक्षा में उनकी रुचि धीरे–धीरे कम हो रही है। इस कथन के प्रति विद्यार्थियों में लगभग समान स्तर का दृष्टिकोण पाया गया।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के प्रति शिक्षकों

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

की भूमिका —

(तालिका – 02)
ऑनलाइन शिक्षा के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण

क्रमांक	प्रश्न	सहमत%
1	क्या आप ऑनलाइन शिक्षा को सिखने–सिखाने के नवीन अवसर के रुप में मानते हैं।	86%
2	कोविड–19 से स्थिति सामान्य होने तक क्या ऑनलाइन शिक्षा को नियमित रुप से रखा जाए।	83%
3	जो विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा गृहण नही कर पा रहे है। क्या उनका उपलब्धि स्तर प्रभावित होगा।	79%
4	क्या ऑनलाइन शिक्षा के कारण विद्यार्थियों में प्रयोगात्मक एवं कौशल आधारित ज्ञान से वंचित हो रहे हैं।	70%
5	आपसे सीधे अंतःक्रिया (Interaction) न होने के कारण विद्यार्थी ई–कंटेंट को गंभीरता से नही लेते है।	68%
6	क्या ऑनलाइन शिक्षा के कारण विद्यार्थियों का ध्यान फैलाव/अवधि प्रभावित हो रही हैं।	65%
7	क्या ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाने के लिए आपके पास पर्याप्त साधन डेटा पैक हैं।	60%
8	विद्यार्थियों की मोबाइल, टेबलेट, लैपटॉप, की आदत को छुड़ाना कठिन हो सकता हैं।	51%
9	क्या ऑनलाइन कक्षा में विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति संभव नहीं हो रही हैं।	44%
10	क्या ऑनलाइन शिक्षण में व्यस्त होने से विद्यार्थियों को शंका समाधान के पूर्व अवसर मिल पा रहे हैं।	36%

तालिका–2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक (86%) शिक्षकों ने ऑनलाइन शिक्षा को सीखने–सिखाने के नवीन अवसर के रुप में स्वीकार किया है तथा (83%) शिक्षकों ने कहा है कि कोविड–19 से स्थिति सामान्य होने तक इसे नियमित रुप से जारी रखा जाये। (79%) शिक्षकों ने कहा कि जो विद्यार्थी ऑनलाइन शिखा ग्रहण नही कर पा रहे है उनका उपलब्धि स्तर प्रभावित होगा। (70%), (68%), (65%) शिक्षकों ने क्रमशः माना कि ऑनलाइन शिक्षा के कारण विद्यार्थी प्रयोगात्मक एवं कौशल आधारित ज्ञान से वंचित हो रहे है वह उनसे प्रव्यअतः अन्तःक्रिया न कर पाने के कारण ई–कंटेंट को गम्भीरता से नहीं ले रहे है तथा उनका ध्यान फैलाव/अवधि भी प्रभावित हो रहा है। (60%) शिक्षकों ने कहा कि उनके पास ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाने हेतु पर्याप्त साधन/डेटा पैक है, जबकि (40%) शिक्षकों ने माना कि उनके पास ऐसे साधन नहीं है। (51%) शिक्षकों ने माना कि इस शिक्षा को प्राप्त करने के फलस्वरुप विद्यार्थियों की मोबाइल, टेबलेट, लैपटॉप आदि की आदत को छुड़ाना कठिन हो सकता है। (44%) शिक्षकों ने कहा कि ऑनलाइन कक्षा में विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति संभव नहीं हो पा रही है। जबकि (36%) शिक्षकों ने कहा कि षिक्षण में व्यस्त होने से विद्यार्थियों को शंका समाधान का पूर्ण अवसर मिल पा रहे है।

निष्कर्ष — सर्वाधिक 88% विद्यार्थियों ने स्वीकार किया है कि ऑनलाइन शिक्षा से उन्हें सीखने के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो रहे है। 86% विद्यार्थियों ने कोविड–19 से स्थिति सामान्य होने तक ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने इच्छा व्यक्त की है। 77% विद्यार्थियों ने यह स्वीकार किया है कि ऑनलाइन शिक्षण के समय उन्हें ऑडियो, विडियों एवं पाठ्य सामग्री स्पष्ट नहीं हो पा रही है।

ऑनलाइन शिक्षा से वंचित साथियों की उपलब्धि स्तर में कमी को 74% विद्यार्थियों ने माना है। 64% विद्यार्थियों ने माना कि इस शिक्षा के कारण वह प्रयोगात्मक तथा कौशल आधारित ज्ञान को पूर्णतया प्राप्त नहीं कर पा रहे है। 57% विद्यार्थियों ने स्वीकार किया है कि इस शिक्षा से उनका ध्यान फैलाव प्रभावित हो रहा है। 56% विद्यार्थियों ने माना कि इस शिक्षा में उन्हें शंका समाधान के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो रहे है।

जबकि 52% विद्यार्थियों का मानना है कि शिक्षक से सीधे अन्तःक्रिया न होने के कारण वह ई–कंटेंट को गम्भीरता से नहीं ले पाते हैं, 50% विद्यार्थियों ने ऑनलाइन शिक्षा के कारण सिर दर्द, पेट दर्द, ऑख दर्द, आदि प्रकार की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बताई है। साथ ही 42% विद्यार्थियों ने माना कि इस शिक्षा में उनकी रुचि धीरे–धीरे कम हो रही है। इस कथन के प्रति विद्यार्थियों में लगभग समान स्तर का दृष्टिकोण सर्वाधीक (86%) शिक्षकों ने ऑनलाइन शिक्षा को सीखने–सिखाने के नवीन अवसर के रुप में स्वीकार किया है। तथा (83%) शिक्षकों ने कहा है कि कोविड–19 से स्थिति सामान्य होने तक इसे

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

नियमित रुप से जारी रखा जाये। (79%) शिक्षकों ने कहा कि जो विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण नही कर पा रहे है उनका उपलब्धि स्तर प्रभावित होगा।

(70%), (68%), (65%) शिक्षकों ने क्रमशः माना कि ऑनलाइन शिक्षा के कारण विद्यार्थी प्रयोगात्मक एवं कौशल आधारित ज्ञान से वंचित हो रहे है वह उनसे प्रत्यक्षतः अन्तःक्रिया न कर पाने के कारण ई–कंटेंट को गम्भीरता से नहीं ले रहे है तथा उनका ध्यान फैलाव/अवधि भी प्रभावित हो रहा है। (60%) शिक्षकों ने कहा कि उनके पास ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाने हेतु पर्याप्त साधन/डेटा पैक है, जबकि (40%) शिक्षकों ने माना कि उनके पास ऐसे साधन नहीं है। (51%) शिक्षकों ने माना कि इस शिक्षा को प्राप्त करने के फलस्वरुप विद्यार्थियों की मोबाइल, टेबलेट, लैपटॉप, आदि की आदत को छुड़ाना कठिन हो सकता है। (44%) शिक्षकों ने कहा कि ऑनलाइन कक्षा में विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति संभंव नही हो पा रही है। जबकि (36%) शिक्षकों ने कहा कि शिक्षण में व्यस्त होने से विद्यार्थियों को शंका समाधान का पूर्ण अवसर मिल पा रहे है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. तेवतिया अनिल कुमार (2020) दिल्ली के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों और शिक्षकों पर लॉकडाउन के प्रभाव का अध्ययन।
2. चतुर्वेदी कुणाल, विश्वकर्मा कुमार दिनेश और सिंह निधि – कोविड़–19 और छात्रों के शिक्षा, सामाजिक जीवन और मानसीक स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव।
3. गोस्वामी पूजा (2022) – कोरोना वायरस महामारी का शिक्षा पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव।
4. बिश्नोई कविता, अमर उजाला, वर्मा निवेदीता (2021) – शिष्यों का किया बेड़ा पार।
5. ह्यूमन राइट वॉच (2021) – महामारी का शिक्षा पर गंभीर वैश्विक प्रभाव।
6. गुप्ता एस.पी. एवं गुप्ता अलका (2017) – उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांत एवं व्यवहार, इलाहबाद, शारदा पुस्तक भवन।

*****